दुनिया को
अक्सर वो लोग
बदल देते है जिन्हें
दुनिया कुछ करने
लायक नहीं समझती।
– अज्ञात

देश की एकात्मता

बाला साहब को हिंदू हृदय सम्राट इसलिए नहीं कहा जाता था, क्योंकि उन्हें किसी अन्य संप्रदाय विशेष से कोई समस्या थी, उनका इतिहास पढ़ेंगे तो वह हिंदू ही नहीं, मुस्लिमों की मदद भी करते थे। दोषी को लेकर सांप्रदायिक आधार पर कभी भेदभाव नहीं करते थे।

विश्व गौरव।

पालघर में दो साधुओं की हत्या हो जाती है, हंगामा मच जाता है। सोशल मीडिया पर ट्रेंड चलने लगता है कि अब महाराष्ट्र में हिंदू खतरे में आ गया है। बाला साहब का खून पानी हो गया है, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने सत्ता के लिए बाला साहब के विचारों की तिलांजलि दे दी, शिवसेना ने अपने विचारों से समझौता कर लिया, और भी न जाने क्या–क्या। कुछ ने तो आरोपियों को भी एक समुदाय विशेष का बताकर देश की एकात्मता को तोड़ने की पूरी कोशिश की। लेकिन क्या आपने सोचा है कि पालघर में जो कुछ हुआ, उसके राजनीतिक, सामुदायिक, सांप्रदायिक और नैतिक रूप से किसकी हत्या हुई? आइए, जरा मस्तिष्क की विवेकशीलता को विस्तार देते हैं और समझने की कोशिश करते हैं कि आखिर हमने यानी भारत ने क्या खोया है।

70 साल के महाराज कल्पवृक्षगिरी, 35 साल के सुशील गिरी महाराज और एक उनके ड्राइवर नीलेश को महाराष्ट्र के पालघर में मार दिया जाता है। इसके बाद घटना से जुड़ा एक विडियो सामने आता है और उस विडियो के सहारे दावा किया जाता है कि उन साधुओं को पीट रहे लोगों में मुस्लिम शामिल हैं। लेकिन जरा एक छोटी सी बात मुझे बताइए, क्या वाकई इस बात से फर्क पड़ना चाहिए कि उन साधुओं को मारने वाला किस जाति, धर्म या संप्रदाय से है? खैर, इसपर बाद में आएंगे।

सबसे पहले तो यह समझिए कि उन साधुओं की हत्या की जिम्मेदारी किसकी हुई ? थोड़ी देर के लिए यह भूल जाइए कि उन्होंने भगवा वस्त्र धारण किए थे या वे साधु थे। वहां तीन आम लोगों को रखकर देखिए, हमलावरों की धर्म–जाति भी मत देखिए। अब यह सोचिए कि एक अपवाह के चलते भीड़ इतनी उन्मादी कैसे हो गई कि उसे पुलिस पर भरोसा नहीं रहा? उस जिले का जिला प्रशासन इतना नकारा कैसे हो गया कि निरंकुश भीड़ लाठी–डंडों से पीटती रही, उसे इस बात पर यकीन नहीं हुआ कि अगर इन लोगों को पुलिस प्रशासन को सौंप दिया जाए, तो वे सच पता लगा सकेंगे? महाराष्ट्र की पुलिस, जिसकी शौर्य की गाथाओं पर सैकड़ों फिल्में बन गईं, उसके सिपाही मूकदर्शक की तरह खड़े रहे, क्या इसके लिए सीधे तौर पर सूबे की सरकार को जिम्मेदार नहीं माना जाएगा? जोड़–तोड़ करके बनी इन सरकारों की क्या बिसात है कि किसी को सजा दें, सजा तो देने में इन साधुओं की वाणी स्वतः सक्षम है।

पालघर में जो हुआ, उसकी सीधी जिम्मेदारी उद्धव सरकार की है। बाला साहब को हिंदू हृदय सम्राट इसलिए नहीं कहा जाता था, क्योंकि उन्हें किसी अन्य संप्रदाय विशेष से कोई समस्या थी, उनका इतिहास पढ़ेंगे तो वह हिंदू ही नहीं, मुस्लिमों की मदद भी करते थे। दोषी को लेकर सांप्रदायिक आधार पर कभी भेदभाव नहीं करते थे। बाला साहब को हिंदू हृदय सम्राट इसलिए कहते हैं क्योंकि वह हिंदू परंपराओं को अपने हृदय में रखते थे, उनके आचार–विचार में सनातन परंपराएं साफ झलकती थीं, और इन परंपराओं का विशेष आधार हैं ये साधु–संत।

विज्ञान और अध्यात्म

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

भारत एकमात्र देश है जो आधुनिक विज्ञान, अनुभव और आध्यात्मिक बल को साथ लेकर चलना जानता है। आज भारत अपने भारत होने की इस भावना को तीव्रता से अनुभव भी कर रहा है, और यहीं पर मुझे देश के उज्ज्वल भविष्य की झलक दिखाई देती है। एक ऐसे भारत की झलक, जिसके दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास के सामने ओछी रस्सियों के लिए कोई स्थान नहीं होगा, जो बार–बार हमें रोकती हैं। इन रस्सियों की पहचान भी बहुत जरूरी है। ये रस्सियां हमारे अवचेतन तक पहुंच चुकी हैं। इन्हें तोड़ना ही होगा और इसकी शुरुआत हमारे प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में लिए गए ऐतिहासिक निर्णयों से हो चुकी है। पर हम सबने अपनी आंखों से यह सब प्रत्यक्ष देखा है। विश्व में कोई और देश यह सोच भी नहीं सकता था, और विश्व ने कोरोना संकट के दौरान भारत द्वारा लिए निर्णयों की कई मंचों पर खुल कर प्रशंसा भी की है।

संपादकीय

पूरा सच दिखाने के रास्ते

समाचार पत्र में पूरा सच छापना और दूरदर्शन पर पूरा सच दिखाने के रास्ते में अनेक जोखिम आड़े आते हैं और कोरोना वायरस के संक्रमण से संबंधित सच को उजागर करने में भी कम जोखिम नहीं हैं परंतु मीडिया को कोई भी जोखिम अभी तक विचलित नहीं कर सका है। गौरतलब है कि हाल में ही मीडिया कर्मियों को उन लोगों अथवा संगठनों की ओर से धमकियां मिल चुकी हैं जिन्हें अपने बारे में सच दिखाया जाना सहन नहीं हुआ द्य कहीं कहीं मीडिया कर्मियों पर हमले भी हुए हैं परंतु किसी भी धमकी अथवा हमले से मीडिया का मिशन कमजोर नहीं पड़ा।

लाक डाउन लागू होने के बाद विगत एक माह के दौरान देश के अनेक भागों से चिकित्सको , पैरामेडिकल स्टाफ के सदस्यों एवं पुलिस अधिकारियों कर्मचारियों के समान ही अनेक मीडिया कर्मियों के भी कोरोना वायरस से संक्रमित हो जाने के समाचार मिल रहे हैं। हाल में ही मुंबई में पत्रकारों के एक संगठन ने मीडिया कर्मियों के लिए एक कोरोना जांच शिविर काआयोजन किया था उसमें 167 पत्रकारों का परीक्षण क्या गया जिनमें से 53 पत्रकारों. को कोरोना पाजिटिव पाया गया। 114 पत्रकारों की रिपोर्ट नेगेटिव आई। कोरोना पाजिटिव पत्रकारों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है और अब यह पता लगाया जा रहघ है कि जिन पत्रकारों की रिपोर्ट पाजिटिव आई है वे विगत एक माह के दौरान किन किन लोगों के संपर्क में आए थे। मुंबई में इतनी अधिक संख्या में पत्रकारों के कोरोना संक्रमित हो जाने के बाद अब अन्य प्रदेशों की सरकारों ने भी मीडिया कर्मियों के स्वास्थ्य परीक्षण के लिए शिविर लगाने का फैसला किया है और सबसे पहले इस काम के लिए पंजाब और दिल्ली की सरकारें आगे आई हैं।

कई विशेषज्ञों का कहना है कि अगर ल०कडाउन नहीं होता तो देश में ऐसे मामले अबतक 50 या 100 गुना ज्यादा होते। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी कहा कि भारत ने एकदम सही समय पर लॉकडाउन का रास्ता अपना लिया।

हंगामा हुआ, राजनीति हुई

ममता सिंह।

देश में लॉकडाउन का एक महीना पूरा हो गया। जब इसकी घोषणा हुई थी तो यकीन करना मुश्किल था कि पूरा देश कभी बंद भी हो सकता है। लेकिन तमाम सीमाओं और कठिनाइयों के बावजूद लोगों ने इसकी बंदिशों का पालन किया। कई विशेषज्ञों का कहना है कि अगर लॉकडाउन नहीं होता तो देश में ऐसे मामले अबतक 50 या 100 गुना ज्यादा होते। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी कहा कि भारत ने एकदम सही समय पर लॉकडाउन का रास्ता अपना लिया। लेकिन लॉकडाउन की घोषणा होते ही लाखों की संख्या में प्रवासी मजदूर–कामगार जिस तरह अपने–अपने गांवों की ओर पैदल ही चल पड़े, उससे अफरातफरी मच गई। लगा कि व्यवस्था के हाथ से सब कुछ निकल गया और भयानक अराजकता फैलने वाली है।

बहरहाल, हालात संभल गए। राज्यों ने अपना काम गंवा चुके मजदूरों के भरण–पोषण की व्यवस्था की। उनके खातों में पैसे डाले और कई अन्य तरीकों से उन्हें राहत पहुंचाई। इसी बीच दिल्ली के निजामुद्दीन इलाके में तब्लीगी जमात का मामला सामने आया जिसने सनसनी फैला दी। पता चला कि एक धार्मिक आयोजन में दुनिया भर से आए 2000 लोगों में से करीब

1400 लॉकडाउन के पहले वहां से निकल नहीं पाए और कई दिनों तक वहीं फंसे रहे। बाद में इनकी बड़ी संख्या कोरोना वायरस से संक्रमित पाई गई और इनके संपर्क में आए लोग भी बीमारी के शिकार हुए। इस पर काफी हंगामा हुआ, राजनीति हुई और कुछ लोगों ने इसे सांप्रदायिक रंग देने की भी कोशिश की। फिर कई जगहों से स्वास्थ्यकर्मियों पर हमले की खबरें आने लगीं लेकिन इस मामले में सरकार ने सख्ती से काम लिया। लॉकडाउन के पहले चरण से सबक लेते हुए सरकार ने इसके दूसरे चरण में संक्रमण की मात्रा के आधार पर देश को अलग–अलग क्षेत्रों में बांटा और बीमारी से ज्यादा प्रभावित इलाकों को सील कर दिया। इस सख्ती का अच्छा असर दिख रहा है लेकिन अब सवाल है कि आगे क्या हो। क्या लॉकडाउन को आगे भी जारी रखना पड़ सकता है? अगर हां, तो मौजूदा पैमाने पर ही इसे जारी रखने के क्या नुकसान हैं?

सचाई यह है कि लॉकडाउन से हमारी अर्थव्यवस्था तकरीबन बैठ गई है। प्रतिदिन 40 हजार करोड़ रुपये का नुकसान होने का अनुमान है। आर्थिक गतिविधियां जल्दी पटरी पर नहीं लौटीं तो बेरोजगारी और भुखमरी की समस्या गंभीर हो सकती है। फिर लोगों के धैर्य की भी एक सीमा है। वे आखिर कब तक घरों में बंद रह सकते हैं? कुछ लोगों की शारीरिक और मानसिक बीमारियां बेकाबू हो सकती हैं। लेकिन दूसरी तरफ, सामाजिक सक्रियता शुरू होने के साथ ही संक्रमण बड़े पैमाने पर बढ़ सकता है। ऐसे में एक ही रास्ता है कि सोशल डिस्टेंसिंग को जीवन पद्धति का हिस्सा बनाते हुए उत्पादन कार्य धीरे–धीरे शुरू किए जाएं। दूसरी तरफ बड़े पैमाने पर जांच की जाए क्योंकि बकौल डब्ल्यूएचओ, कोरोना अभी लंबे समय तक रहने वाला है।

अष्टयोग-5036

5	6		4	1		3
	35	3	31		27	
4		7			5	2
	31	6	40		30	
2	3			4	1	6
	27	4	37		35	
	5	1			2	

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है.खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं.गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी.सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5035 का हल

4	3	1	5	2	7	6
1	24	4	29	6	34	2
5	4	2	6	3	1	7
2	33	6	38	7	28	3
6	5	3	7	4	2	1
7	38	5	36	5	28	4
3	2	7	4	1	6	5

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

सावधानियां बरतने की सलाह

मोहन। उचित तो यही होगा कि केन्द्र सरकार इस संबंध में एक गाइड लाइन जारी करे और संपूर्ण देश में फील्ड में काम करने वाले मीडिया कर्मियों को पी पी ई किट प्रदान करने केलिए सभी राज्य सरकारों को निर्देशित करे। पाजिटिव पाए जाने के पूर्व मध्य प्रदेश में एक पत्रकार को कोरोना पाया गया था राज्य सरकारों को निर्देशित कर दे। देश के कई अन्य हिस्सों में मीडिया कर्मियों के कोरोना संक्रमित होने की बढती खबरों ने केन्द्र सरकार का भी ध्यान आकर्षित किया है और अबउसकीओर से प्रिन्ट मीडिया एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के लिए एक एडवायजरीजारी की गई है जिसमें रिपोर्टर केमरामेन और फोटोग्राफर आदि मीडिया कर्मियों को हाट स्पाट, कोरोना संक्रमित क्षेत्रों,हाटॉ स्पाट और कोविड19 से प्रभावित अन्य इलाकों में जाते समय स्वास्थ्य संबंध सभी आवश्यक सावधानियां बरतने की सलाह दी गई है।